उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक: 25/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनांक: 04–04–2025

दिनांक : 03 अप्रैल, 2025 **समय : 12:00 बजे**
स्थान : उपकार सभाकक्ष **उपस्थितिः संलग्न**

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की प्रथम बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की प्रथम बैठक, डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 03 अप्रैल, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक एवं पादप रोग वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक एवं मौसम वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; रेशम विभाग; यू.पी. डास्प के प्रतिनिधि तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के कीट वैज्ञानिक तथा मौसम वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी तिलहन वैज्ञानिक एवं दलहन वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

<u>आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (04–10 अप्रैल, 2025)</u>

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के अंतिम चरण में 9 से 10 अप्रैल के दौरान उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र, भांभर तराई, पूर्वी मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र में कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से 1 से 2 डिग्री सेल्सियस जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से 2 से 4 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की संभावना है।

प्रदेश के भांभर तराई क्षेत्र में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी, मध्य पश्चिमी मैदानी तथा उत्तर-पूर्वी मैदानी का उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 38 से 40 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के अधिकतर कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से 1 से 2 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 16 से 18 डिग्री सेल्सियस तथा अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 18 से 20 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

<u>आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (11–17 अप्रैल, 2025)</u>

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के भांभर तराई, उत्तरी पूर्वी मैदानी, विंध्य, बुंदेलखण्ड, अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र, मध्य मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में कहीं–कहीं वर्षा होने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र, पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से 1–2 डिग्री सेल्सियस अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री सेल्सियस; जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 36 से 38 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से 2 से 3 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की संभावना है।

प्रदेश के पूर्वी मैदानी तथा मध्य मैदानी क्षेत्र में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 20 से 22 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिनांक 31 मार्च, 2025 तक उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल जायद की बुवाई का लक्ष्य 14.28 लाख हे. के सापेक्ष कुल जायद फसलों की बुवाई 13.42 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 93.97 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 4.31 लाख हे. के सापेक्ष 4.59 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 106.71 प्रतिशत है। बाजरा के आच्छादन लक्ष्य 1.15 लाख हे. के सापेक्ष 0.89 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 78.07 प्रतिशत है। मूंग के आच्छादन लक्ष्य 2.0 लाख के सापेक्ष 1.81 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 90.26 प्रतिशत है। उर्द के लक्ष्य 0.9 लाख हे. के सापेक्ष 0.84 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 93.14 प्रतिशत है। सूरजमुखी के लक्ष्य 0.04 लाख हे. के सापेक्ष 0.005 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 12.29 प्रतिशत है। चेना की बुवाई लक्ष्य 0.012 लाख हे. के सापेक्ष 0.014 लाख हे. में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 87.08 प्रतिशत है। जायद सब्जियों के 2.19 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 2.22 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 101.43 प्रतिशत है। मूंगफली के 2.09 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 1.70 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 81.05 प्रतिशत है। हरा चारा के 1.24 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 1.22 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 97.64 प्रतिशत है।

मौसम के परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- जो खेत खाली हैं उन खेतों का मृदा परीक्षण करा लें तथा मृदा परीक्षण के आधार पर ही संस्तुत उर्वरकों का प्रयोग करें।
- खाली खेतों में गर्मी की गहरी जुताई तथा मेड़ों की साफ-सफाई करें।
- सुरक्षा की दृष्टि से आग से बचाव हेतु गेहूं एवं जौ की कटाई के बाद फसल के गट्ठरों को बिजली के तार/ट्रांसफार्मर के नीचे व आस-पास न रखें।
- जायद मक्के की फसल को 5-6 सिंचाई आवश्यक होती है अतः 10-12 दिन के अंतराल पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई-गुड़ाई करें।
- उत्तर प्रदेश शासन के निर्देश के क्रम में फसल अवशेषों को जलाना प्रतिबन्धित है साथ ही साथ कम्बाइन हार्वेस्टिंग मशीन के साथ स्ट्रा रीपर विद बाइन्डर अनिवार्य कर दिया गया है। उक्त के दृष्टिगत किसान फसल अवशेषों को खेतों में कदापि न जलाएं। उपकार तथा केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान-क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ द्वारा विकसित जैविक फॉरमुलेशन हेलो-केयर का प्रयोग कर खेत में ही फसल अवशेषों को 21 से 24 दिन में सड़ाया जा सकता है जिससे फसल अवशेष का जीवांश कार्बन और पोषक तत्वों को मृदा में पुर्नचक्रण होता है जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। हेलो-केयर केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान-क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ पर उपलब्ध है जहां से किसान भाई इसे प्राप्त कर सकते हैं।
- सुनिश्चित सिंचाई की दशा में सूरन व अरबी की बुवाई अतिशीघ्र करें।
- आम के फलों को गिरने से बचाने के लिए नैप्थलीन एसिटिक एसिड (एन.ए.ए.) 20 पी.पी.एम. या प्लैनोफिक्स 90 मिली/200 लीटर पानी में छिड़काव करें।

जायद फसलों की खेती

- मूंग की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु अधिक उपज वाली व पीला मोजैक अवरोधी संस्तुत किस्मों यथा सम्राट (पी.डी.एम. -139) तथा एच.यू.एम.-16 (मालवीय जन कल्याण) की बुवाई शीघ्र सुनिश्चित करें।
- बाजरा की संस्तुत संकुल किस्मों आई.सी.एम.वी.-221, धन शक्ति, आई.सी.टी.पी.-8203, राज-171, पूसा कम्पोजिट-383, पूसा कम्पोजिट-701 तथा संकर किस्मों यथा एम.पी.- 7792, एम.एच.-1553, 86 एम 84, 86 एम.-52, जी.एच.बी.-526, जी.एच.बी.-558 एवं पी.बी.-180 की यथाशीघ्र समाप्त करें।
- ज्वार की एकल कटाई हेतु संस्तुत प्रजातियों पी.सी.- 6,9,23, एच.सी.-171, 260, यू.पी. चरी-1-2, राज चरी-1,2 तथा बहु कटाई वाली प्रजातियों एस.एस.जी.-998, 855, को.-27, पंत चरी-5 की बुवाई मध्य अप्रैल तक समाप्त करें।
- मूँग में पहली सिंचाई बुआई के 30-35 दिन के बाद करें।
- उर्द/मूँग की फसल में 5 से 10 पौढ़ मक्खी (सफेद मक्खी) प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर आक्सीडेमेटॉन-मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. या डाइमेथोयेट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600-800 ली. पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।
- उर्द/मूँग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजैक) रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधे सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दे/गाड़ दें) कर दें।
- ग्रीष्मकालीन मूंगफली की बुवाई के बाद पहली सिंचाई जमाव के पूर्ण होने पर करें तथा बुवाई के 15 से 20 दिन बाद निराई-गुड़ाई करें।
- उर्द में थ्रिप्स के लिये निगरानी रखें। प्रथम सिंचाई के पहले नियंत्रण हेतु सुरक्षात्मक जैविक कीटनाशक नीम ऑयल 0.15 प्रतिशत ई.सी. 2.5 लीटर की दर से 200 से 300 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- जायद में सूरजमुखी की विरलीकरण कर पौधों के बीच की दूरी 15 से 20 से.मी. सुनिश्चित करें।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की फसल पकने की अवस्था में है। अतः किसान भाई फसल कटाई-मड़ाई के उपरांत भण्डारण से पूर्व अनाज को अच्छी तरह से सुखा लें, जिससे नमी की मात्रा 10 प्रतिशत से अधिक न हो इसके लिये किसान भाई दानों को दांतों के नीचे दबाने से कट की आवाज आने पर इसे भण्डारण करने योग्य समझें।
- अनाज को धातु की बनी बखारियों अथवा कोठिलों, बोरियों या कमरें में जैसी सुविधा हो भण्डारण करें। भण्डारण के लिए धातु की बनी बखारी बहुत ही उपयुक्त है। भण्डारण के पूर्व कोठिलों तथा कमरे को साफ कर लें और दीवालों तथा फर्श पर मैलाथियान 50 प्रतिशत के घोल (1:100) को 3 लीटर प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से छिड़काव के बाद करें तथा सूखने के उपरान्त भण्ड़ारण करें। बखारी के ढक्कन पर पालीथीन लगाकर मिट्टी का लेप कर दें जिससे वायुरोधी हो जायें।

गन्ना की खेती

- फरवरी माह में बोई गई फसल में सिंचाई उपरान्त 50 किग्रा. नत्रजन/हे. (110 किग्रा. यूरिया) की टॉपड्रेसिंग कर गुड़ाई करें। शरदकालीन गन्ने में यदि यूरिया की टापड्रेसिंग अवशेष हो तो 60 किग्रा. नत्रजन/हे. (132 किग्रा. यूरिया) की टापड्रेसिंग करें।
- शरदकालीन बावग गन्ने में अन्तःफसल की कटाई/खुदाई के पश्चात फसल अवशेष मृदा में मिला दें तथा सिंचाई पश्चात 130 किग्रा. यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ने की लाइनों में टॉप ड्रेसिंग कर दें।
- बसंतकालीन गन्ने की बुवाई का कार्य यथाशीघ्र पूर्ण कर लें, जिससे जमाव प्रभावित न हों। वर्तमान में बुवाई करने पर एक आंख वाले गन्ने की ही बुवाई करें।
- बसंत के प्रारंभ में बोये गये गन्ने की गुड़ाई करें।

- पेड़ी गन्ने में काला चिकटा का प्रकोप होने पर 5 लीटर क्लोरपाईरीफॉस 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- गन्ने में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार नियंत्रण के लिये 2,4 डी सोडियम सॉल्ट 80 प्रतिशत, 1.25 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से तथा पतली पत्ती के लिये एट्राजिन 2 कि.ग्रा. (सक्रिय तत्व) की दर से प्रयोग करें।
- गन्ने की पत्तियों पर अंकुर बेधक एवं चोटी बेधक कीट के अंडे दिखने पर पत्ती को तोड़कर नष्ट कर दें जिससे कीट के आगे की पीढ़ी समाप्त हो जाय।

सब्जियों की खेती

- जायद मौसम में भिण्डी, लोबिया, बैंगन एवं कद्दूवर्गीय फसलें यथा कद्दू, लौकी, तरोई, खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूज तथा अन्य सब्जी फसलों की बुवाई जिन किसान भाइयों ने अभी तक नही की है वह अतिशीघ्र बुवाई करें।
- फसल को कीटों से बचाव हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3-5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर या नीम आधारित कीट नाशकों का प्रयोग करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों को फल मक्खी से बचाने हेतु क्यू ल्योर फेरोमोन ट्रैप 8-10 ट्रैप प्रति हे0 की दर से लगायें।
- लहसुन एवं प्याज की फसल पक गयी होगी, उसकी खुदाई करें। खुदाई से 12-15 दिन पहले सिंचाई बन्द कर दें।
- बैंगन को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए एसिटिलकोलाइन 0.4 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- फरवरी माह में बोई गयी कद्दूवर्गीय फसलों में यदि हरा फुदका कीट 10 की संख्या में प्रति ह्रिल दिखाई दे तो फल तुड़ाई उपरान्त फसल पर इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली. दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- आम, लीची व केलों के बागों में नमी बनाये रखें।
- केले में 1 कि.ग्रा. गोबर की खाद के साथ 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा मिलाकर नमी की दशा में गुड़ाई करके मिलायें।
- आम के भुनुगा कीट की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. (3.0 मिली0/10 लीटर) एवं प्रोफेनोफास 50 प्रतिशत ई.सी. (1 मिली0/लीटर) पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- लीची में पत्ती मरोड़क (लीफ फोल्डर) की रोकथाम के लिए बाईफेनथ्रिन कीटनाशी 10 प्रतिशत ई.सी. 1.0 मिली0 मात्रा अथवा लैम्डासाइहलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई.सी. कीटनाशी की 2.0 मिली0 मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन बाद द्वितीय छिड़काव करें।

पशुपालन

- वर्तमान मौसम में पशुओं में गलाघोटू, खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.), लगड़ी बुखार आदि बीमारियों से बचाने के लिये टीकाकरण अवश्य करायें। यह टीकाकरण पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है तथा किसानों के द्वार पर जाकर पशुपालन विभाग द्वारा लगाया जा रहा है।
- पशुओं को दिन के समय सीधी धूप से बचायें उन्हें बाहर चराने न ले जाय व छायादार तथा हवादार स्थानों में ही बांधे।
- पशुओं के पास हमेशा पीने का पानी रखें।
- पशुओं को हरा चारा व संतुलित आहार दें जिसमें सभी पोषक तत्व मौजूद हो। पशुओ को गर्मी के मौसम में खनिज मिश्रण, मल्टी विटामिन तथा एल्क्ट्रोल दें।

- पशुओ को तेल युक्त खाद्य पदार्थ जैसे सरसों की खली, बिनौला, सोयाबीन की खली या अलग से तेल या घी आदि पशु को खिलाना चाहिए।
- पशुओं के आवास के आस-पास छायादार वृक्षों की मौजूदगी पशुशाला के तापमान को कम रखने में सहायक होती है।
- गाय, भैंस के आवास की छत यदि कंकरीट की है तो उसके ऊपर 4 से 6 इंच मोटी घास-फूंस की तह लगा देने से पशुओं को गर्मी में आराम मिलता है।

मत्स्य पालन

- मछली पालन हेतु तालाब बनाने के लिए उपयुक्त स्थान का चुनाव करना चाहिए साथ ही पुराने तालाबों का सुधार/मरम्मत करें। नये तालाबों का निर्माण कार्य भी प्रारंभ कर दें।
- मत्स्य बीज उत्पादक ग्रास कार्प का ब्रिडिंग हैचरी में शुरू करें दें।
- आर्गुलस एवं कीड़ों का तालाब में संक्रमण होने पर कीड़ों को मारने हेतु ब्यूटाक्स का प्रयोग 80-100 एम. एल.प्रति एकड़ की दर से धूप रहने पर करें, जैविक एवं रासायनिक उर्वरक का प्रयोग विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार करें।
- हैचरी संचालक/मत्स्य बीज उत्पादक अच्छे अण्डों का निषेचन दर एवं स्पॉन की उत्तरजीविता के लिए प्रोटीन युक्त आहार, प्रोबायोटिक का प्रयोग मछली के आहार में करें एवं नर/मादा का पृथक्कीकरण करें।
- तालाब में जलीय कीटों, खरपतवार एवं अवांछनीय मछलियों की सफाई थोड़े-थोड़े अन्तराल पर कराते रहें।
- इस महीने में तालाब में कॉमन कार्प मत्स्य बीज का संचय करें।
- तालाब मत्स्य बीज संचय से पहले 200-600 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुझे हुए चूने का प्रयोग करें।
- प्लैंकटान नेट से नर्सरी/तालाब के पानी में प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता की जाँच करनी चाहिए।
- तालाब में जाल चलवाकर संचित मत्स्य बीज की प्रगति एवं स्वास्थ्य की जाँच एवं उपचार समय-समय पर करते रहें।
- तालाब में पूरे वर्ष कम से कम 1.5 मीटर पानी का स्तर बना रहे ऐसी व्यवस्था करें।

रेशम पालन

- ग्रीष्म शहतूती व्यवसायिक फसल 2025 चाकी कीटपालन कार्य प्रगति पर है। 3 से 4 दिन में चाकी रेशमकीट का वितरण होना है। इस हेतु कीटपालकों/कृषकों को सुझाव दिया जाता है कि कीटपालन गृह में आवश्यक तापमान व आर्द्रता बनाये रखे एवं कीटों की साफ-सफाई तथा फीडिंग समय से करें।
- कीटपालन एवं उपकरण के विशुद्धीकरण का कार्य यदि अभी तक पूर्ण नहीं किया है तो यथाशीघ्र पूर्ण कर ई-डिस्ट्रिक पोर्टल पर http://sericulture.eservicesup.in अपना पंजीकरण कराते हुये आवश्यक कीटाण्ड मात्रा आरक्षित करा लें। किसी भी प्रकार की असुविधा/जानकारी के लिये मो. नंबर 7388305554 पर संपर्क करें।

वानिकी

- खैर, ऑवला, अर्जुन के बीजों की बुवाई यदि अभी तक पूर्ण न की गई हो तो अंकुरण कक्ष में तुरन्त पूर्ण कर लें। आवश्यकतानुसार पौधों की सिंचाई करें।
- ऊसरीले क्षेत्रों में पौधे लगाने से पहले जिप्सम से उपचार कर लें।
- अधिक तापमान के दृष्टिगत अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर में प्रिंक कर छाया घर में रख दें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनांक 17 अप्रैल, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं।

- **क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।**
- **क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।**

ह०
(संजय सिंह)
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।

22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

3-4-25

(विनोद कुमार तिवारी)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025-26 की प्रथम बैठक दिनांक 03 अप्रैल, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. श्री एस.के. सिंह, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. संजीव, उप महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
4. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ
5. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
6. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
7. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
8. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
9. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
10. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
11. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
12. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम विज्ञान विभाग), आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
13. डा. संजय कुमार मिश्र, उपनिदेशक, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश ।
14. श्री नीरेन्द्र कमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।
15. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
16. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
17. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ
18. श्री जितेन्द्र सिंह, वरिष्ठ पर्यावरण विशेषज्ञ, यू.पी. डास्प, लखनऊ।